Self Respect

28-07-2014

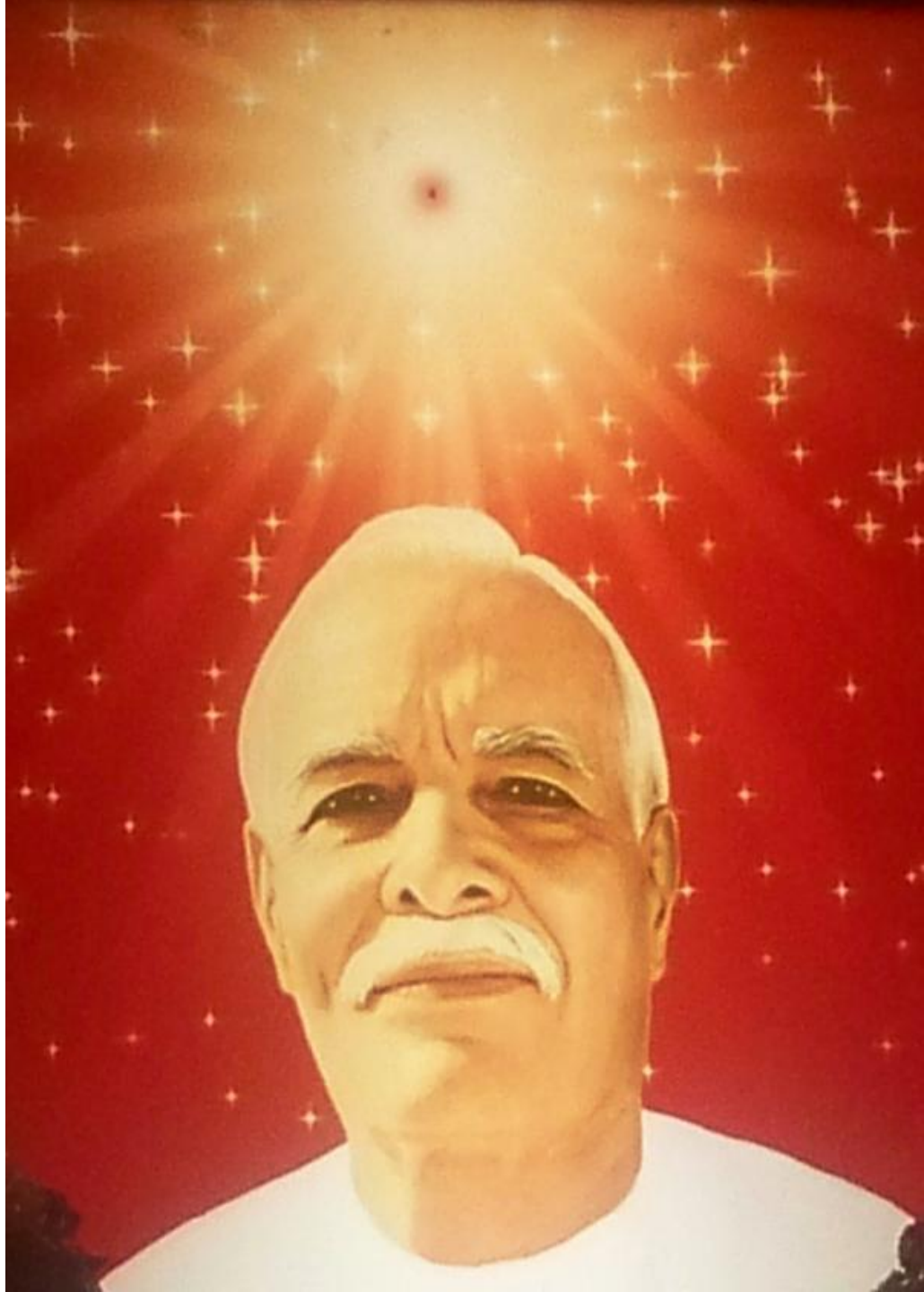

- ✓शिव भगवानुवाच । जब शिव भगवानुवाच कहा जाता है तो समझ जाना चाहिए-एक शिव ही भगवान् वा परमपिता है । उनको ही तुम बच्चे वा आत्मा याद करती हो । परिचय तो मिला है रचता बाप से ।

- ✓वह मनुष्य लोग तो कुछ भी नहीं जानते । न जानने कारण सर्वव्यापी कह देते । जिस प्रकार तुम बच्चे अपने को आत्मा समझते हो, बाप को याद करते हो, ऐसे और कोई याद नहीं कर सकते होंगे । कोई भी आत्मा का योग बाप के साथ है नहीं । यह बातें हैं बहुत गुह्य, महीन ।

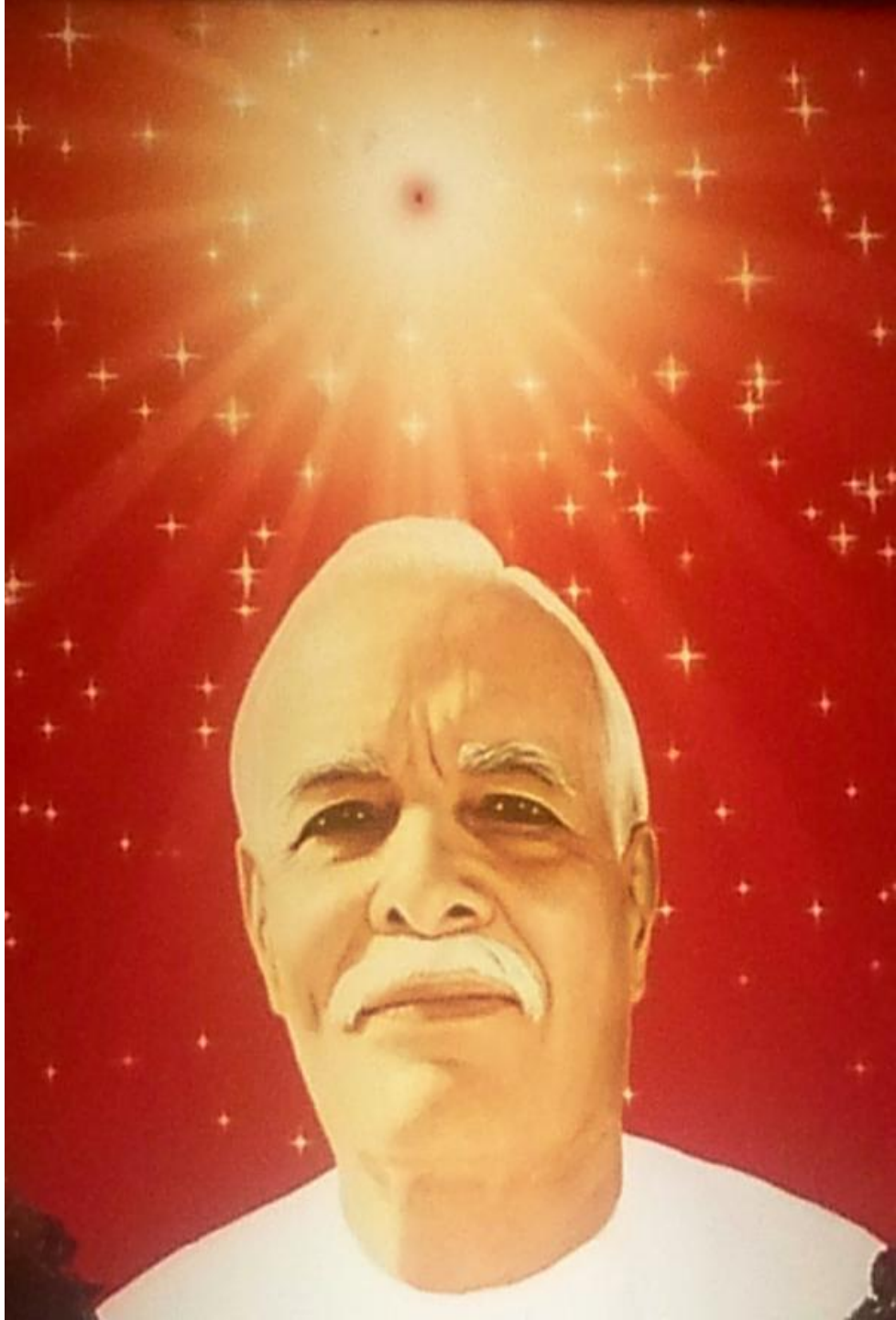

- ज्ञान का सागर परमात्मा ही है । तुम अपने को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे । तुम जानते हो हमको बाबा से पूरा ही ज्ञान लेना है । वह अपने पास रखकर क्या करेंगे । अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन तो बच्चों को देना ही है । बच्चे नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार उठाने वाले हैं । जो जास्ती उठाते हैं वही अच्छी सर्विस कर सकते हैं । बाबा को ज्ञान सागर कहा जाता है । वह भी आत्मा, तुम भी आत्मायें । तुम आत्मायें सारा ज्ञान ले लेती हो । जैसे वह एवर प्योर है, तुम भी एवर प्योर बनेंगे । फिर जब अपवित्रता की रिंचक भी नहीं रहेगी तब ऊपर चले जायेंगे ।

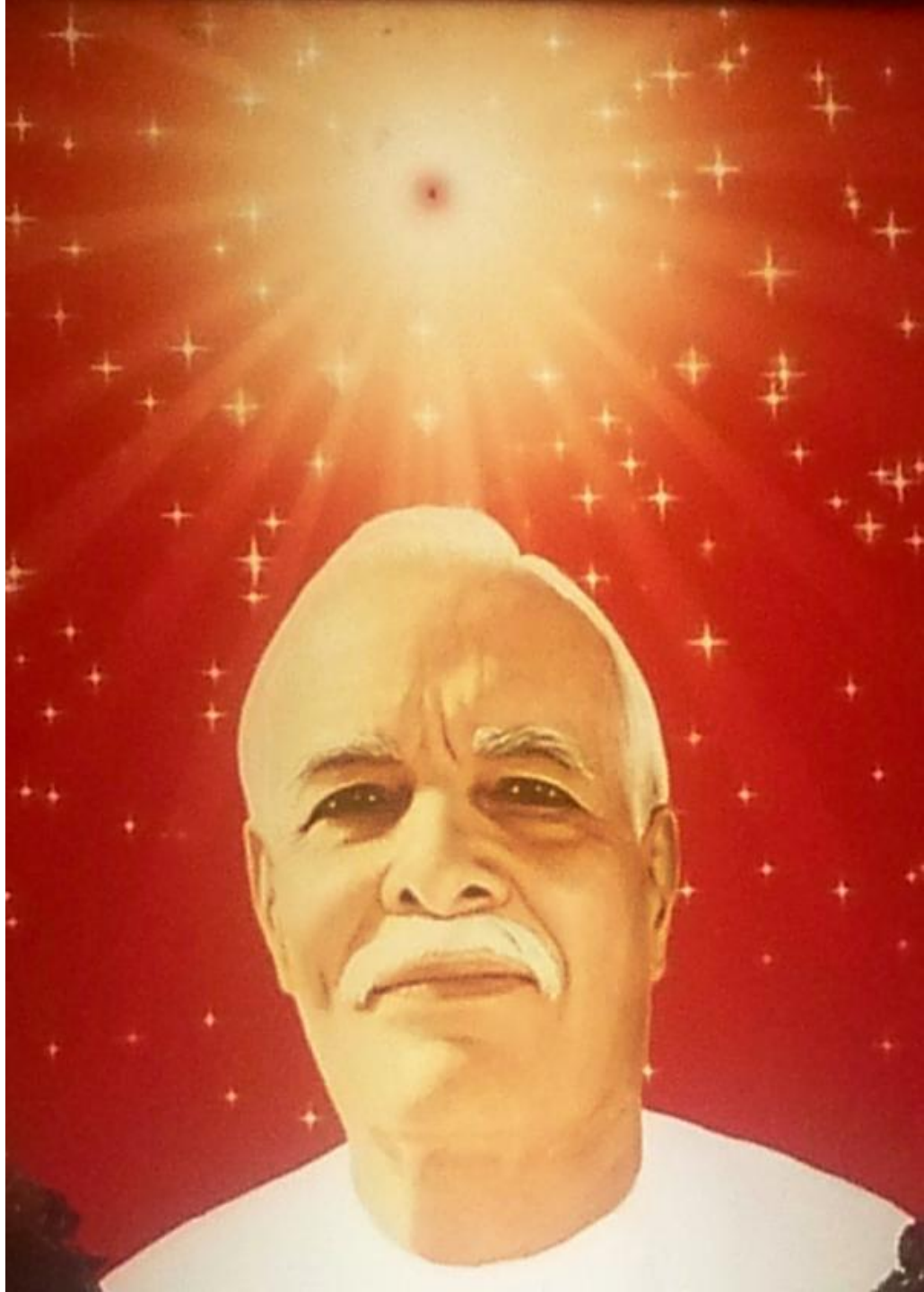

- ✓ स्वर्ग तो सब चाहते हैं । भारतवासी ही वैकुण्ठ स्वर्ग को याद करते हैं । और धर्म वाले वैकुण्ठ को याद नहीं करते । वह सिर्फ शान्ति को याद करेंगे । सुख को तो याद कर न सके । लॉ नहीं कहता । सुख को तो तुम ही याद करते हो इसलिए पुकारते हो हमें दुःख से लिबरेट करो ।

- ✓ राजधानी स्थापन हो रही है । सब नर से नारायण कैसे बनेंगे । इस गीता पाठशाला की एम ऑबजेक्ट तो यह है । वही गीता ज्ञान है । वह भी कौन देते हैं, यह तो सिवाए तुम्हारे कोई जानते ही नहीं । अभी है कब्रिस्तान फिर परिस्तान होने का है । अभी तुम्हें ज्ञान चिता पर बैठ पुजारी से पूज्य जरूर बनना है ।

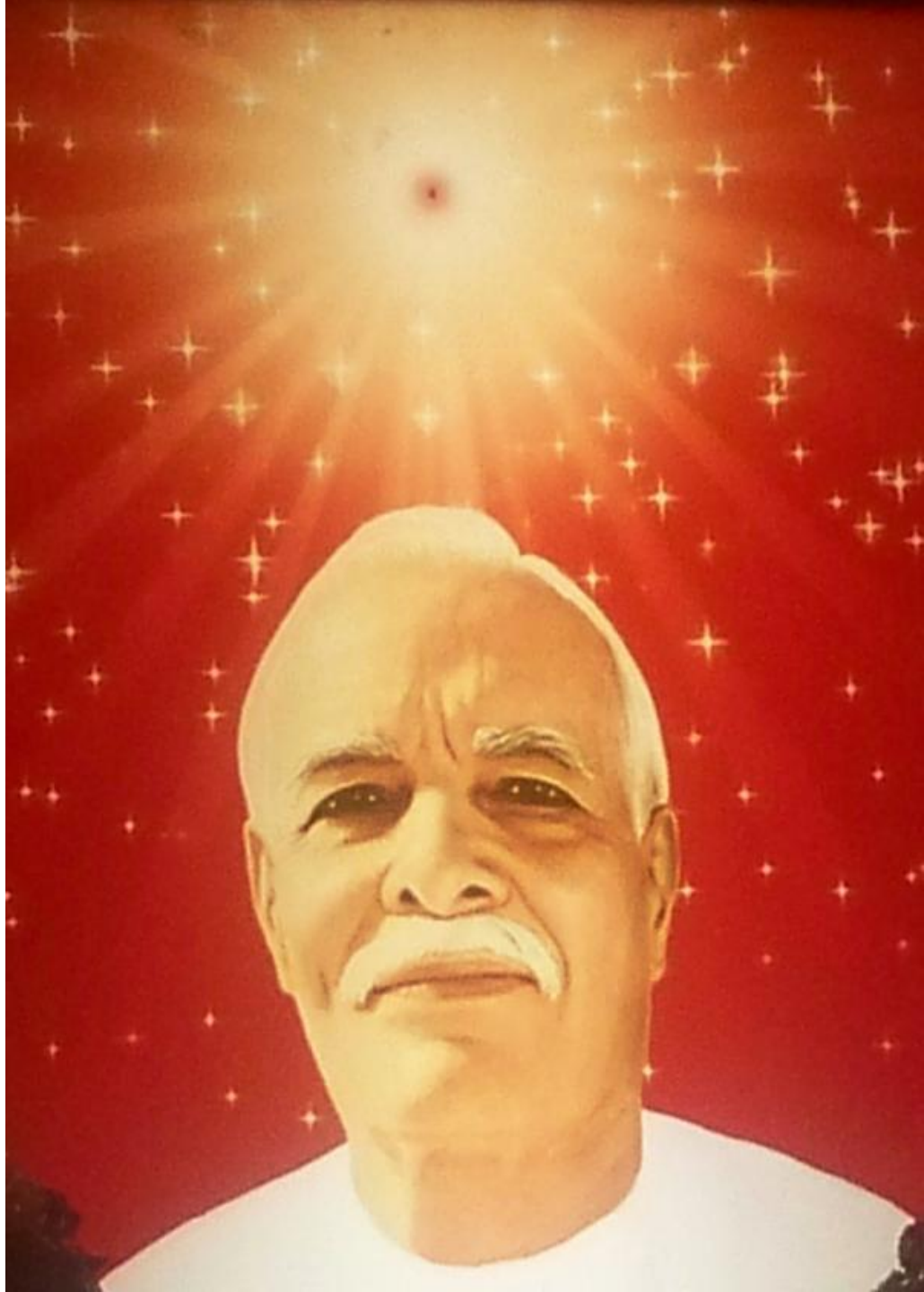

- ✓ अभी तुम हो ईश्वरीय सन्तान । बाप पढ़ा रहे हैं । यह मिशन है मनुष्यों को चेन्ज करने की । जैसे बौद्धियों की, क्रिश्चियन की मिशन होती है ना ।

- ✓यह एक ही पढ़ाई, एक ही बार, एक ही बाप से मिलती है ।

- ✓बाबा बैज़ की बहुत महिमा करते हैं । वह समय आयेगा जो यह तुम्हारे बैज सब नयनों पर रखते रहेंगे ।

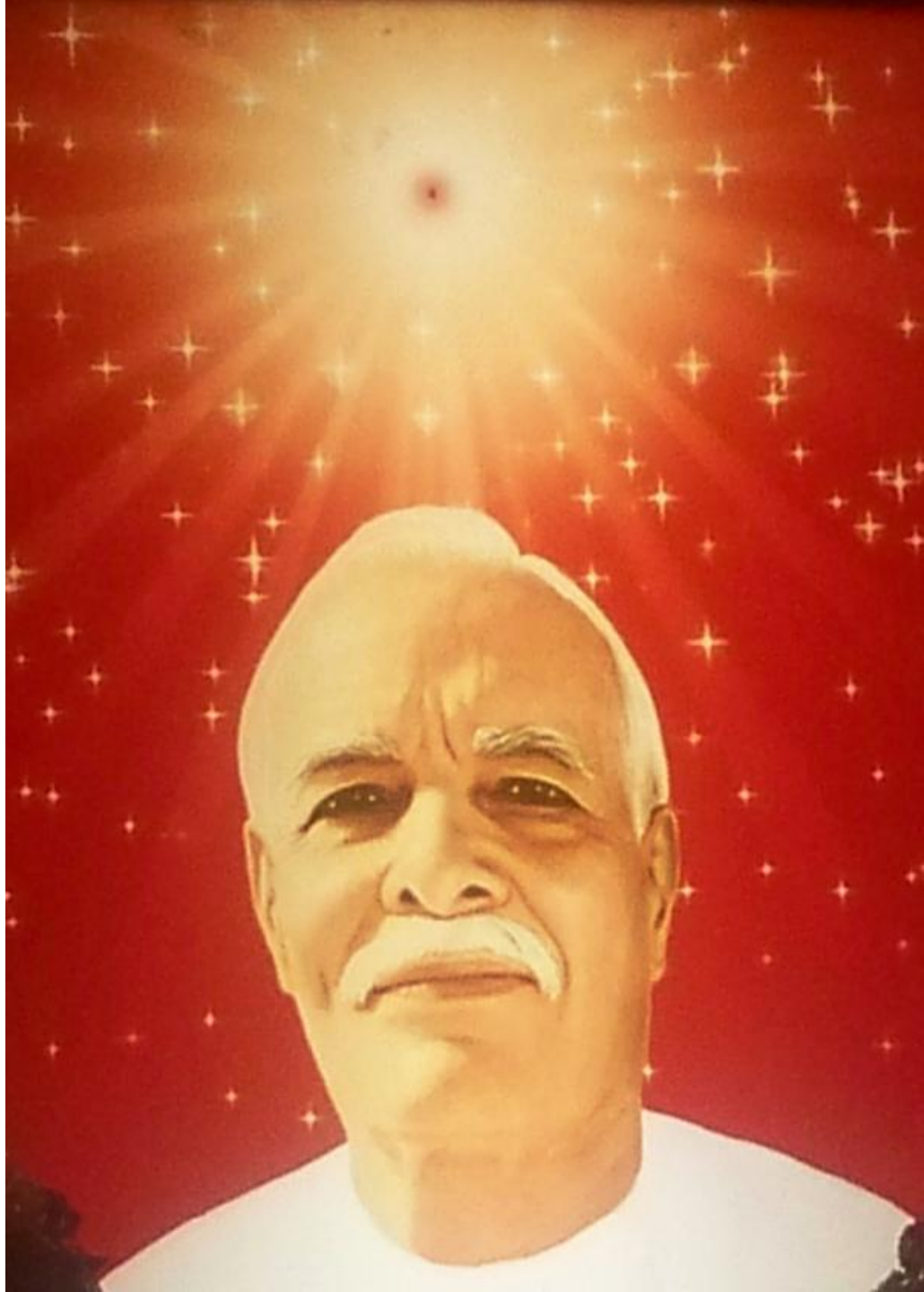

✓वरदान: ब्राह्मण जीवन में सर्व खजानों को सफल कर सदा प्राप्ति सम्पन्न बनने वाले सन्तुष्टमणि भव !

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।